इ
का
ई

4 छत्तीसगढ़ :– परिवेश, कला–संस्कृति एवं व्यक्तित्व

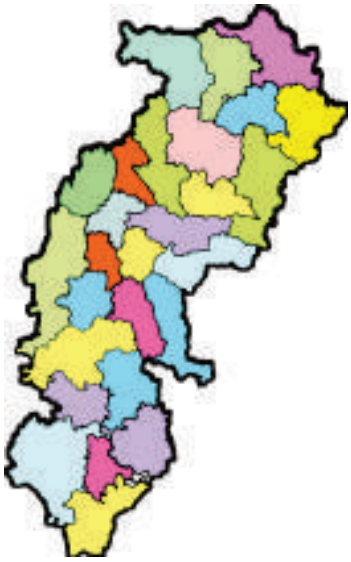

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता उसे भारत के कई राज्यों की तरह एक बहुरंगी स्वरूप देती है। आप छत्तीसगढ़ की लोक कलाओं में यहाँ की संस्कृति के विविध आयामों के दर्शन कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ के सपूतों ने कई क्षेत्रों में इसके गौरव को बढ़ाया है। उन सपूतों की गौरव गाथाओं का गान हमारी परंपराओं में है।

इस इकाई की रचना का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक कलाओं की चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध विकसित करना और यहाँ के गौरवशाली व्यक्तित्व तथा उनके कृतित्व से उन्हें परिचित कराना है।

इस इकाई में शामिल पाठ वीर नारायण सिंह, छत्तीसगढ़ के आदिवासी स्वातंत्र्य सेनानी शहीद वीरनारायण सिंह के समाज के शोषकों एवं तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध वीरतापूर्ण संघर्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराता है।

'कविता', 'गृह–प्रवेश' हमारे परिवेश में व्यक्ति के एकाकीपन को महसूस करने की संवेदना विद्यार्थियों में जगाती है, और बताती है कि घर को एक 'गृहिणी' सचमुच 'घर' बना देती है। कविता के अंत में चिड़िया का वापस न जाने के लिए अंतःपुर में आ जाना घर को एक गृहिणी मिल जाने का प्रतीक है।

इस इकाई में शामिल पाठ 'छत्तीसगढ़ की लोककला' में लोककलाओं की विशिष्टताओं को रेखांकित कर छत्तीसगढ़ के लोकगीतों, लोकनाट्यों एवं लोकनृत्यों तथा उनसे जुड़े कलाकारों से परिचित कराया गया है।